ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-2* May- 2021
Anthology : The Research

अस्पृश्यता के सम्बंध में डॉ. अंबेडकर और महात्मा गांधी के विचार

Thoughts of Dr.Ambedkar and Mahatma Gandhi on Untouchability

Paper Submission: 04/05/2021, Date of Acceptance: 14/05/2021, Date of Publication: 23/05/2021

सुन्दर लाल
सहायक आचार्य,
इतिहास विभाग,
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर,
राजस्थान, भारत

सारांश

अस्पृश्यता का भारतीय समाज मे ऐतिहासिक काल से विधमान रही है इस की जड़े इतनी गहरी है की बुद्ध से लेकर अंबेडकर व गांधी तक अनेक लोग इसके निवारण के लिए समय–समय पर प्रयास करते रहे है, अस्पृश्यता एक सामाजिक यथार्थ है। इसका अस्तित्व सामाजिक यथार्थ के तीन प्रमुख आयामो व्यक्ति,समाज एवं संस्कृति मे समान रूप से पाया जाता है। अस्पृश्यता की मूल समस्या सामाजिक समानता की समस्या है। अंबेडकर इसी प्रकार गरीबी एवं सामाजिक असमानता मे भेद स्पष्ट करते है यही कार्य गांधी प्राचीन वर्ण व्यवस्था को आधार बनाकर करते है।

Untouchability has been present in the Indian society since the historical period, its roots are so deep that many people from Buddha to Ambedkar and Gandhi have been making efforts from time to time for its redressal, untouchability is a social reality. Its existence is found equally in the three major dimensions of social reality, individual, society and culture. The basic problem of untouchability is the problem of social equality. Ambedkar clarifies the difference between poverty and social inequality in the same way, Gandhi does the same work on the basis of the ancient Varna system.

मुख्य शब्द : अस्पृश्यता सामाजिक असमानता, सामाजिक न्याय, वर्ण व्यवस्था।
Untouchability, Social Inequality, Social Justice System.

प्रस्तावना

सर्वप्रथम ऋग्वेद की रचना हुई, इसके बाद यजुर्वेद, सामवेद और अन्त में अथर्ववेद की रचना हुई। ऋग्वेद के समय की रचना को विद्वानों ने सबसे प्राचीन 2500 ई.पू. से 1500 ई.पू. तक माना है। अथर्ववेद के प्रारम्भिक समय में केवल ब्राह्मण, राज्न्य और वैश्य शब्द का ही वर्णन मिलता है, शूद्र शब्द का उल्लेख नही मिलता। इससे यह लगता है कि अथर्ववेद के अंत में शूद्रों को समाज के एक वर्ग के रूप में चित्रित किया गया हैं। इसी कालावधि में शूद्र उत्पत्ति के संबंध में ऋग्वेद के दसवें मंडल पुरूष सूक्त में उल्लेख किया गया है। मैक्समूलर ने भी अर्थववेद में जनेऊ धारण करने का अधिकार था। स्त्रियाँ न केवल वेद पढ़ती थी बल्कि वेद पढ़ाने के लिए विद्यालयों का भी संचालन करती थी। शूद्र राजा सुदास का राज्यारोहण संस्कार एवं उसका राजसूय यज्ञ का कार्यक्रम स्वंय वशिष्ठ ने कराया था।[1] इस समय में शूद्र अछूत नहीं थे। इसलिए ऋग्वैदिक काल को समतावादी युग कहा जाता है।[2] वर्ग विभाजन और असमानता तथा भेदभाव का युग तो उतरवैदिक युग की अंतिम स्थिति में आरम्भ हुआ। परन्तु महात्मा बुद्ध से पूर्व वैदिक कर्मकाण्ड पराकाष्ठा पर पहुँच गए थे। जनता का एक वर्ग वैदिक कर्मकाण्डों से असंतुष्ट होकर मुक्ति की खोज करने लग गया था। इस असंतोष के परिणामस्वरूप जैन और बौद्ध धर्मों का प्रादुर्भाव हुआ था। इसलिए शूद्रों के वर्ग–विभाजन की अवस्था को 1000 ई.पू. से 600 ई. पू. के मध्य माना जा सकता हैं। इस अवधि में उत्पादन के साधनों में परिवर्तन आकर सामाजिक व्यवस्था में स्थायित्व आ गया और धीरे–धीरे शूद्रों में सबसे निम्न अथवा अस्वच्छ पेशा करने वाले को अस्पृश्य कहा जाने लगा।

अध्ययन का उद्देश्य

1. समाज में सामाजिक न्याय की भावना का विकास करना जिससे सभी व्यक्तियों को सर्वांगीण विकास के अवसर मिल सके।
2. समाज में समानता स्वतंत्रता भ्रातृत्व की भावना का विकास करना
3. समाज में अस्पृश्यता को जड़ से मिटाकर समाज में सद्भाव, समरसता, समता स्थापित करना।

अछूत अथवा अस्पृश्य एवं तिरस्कृत और पंचम वर्ग की उत्पत्ति

अस्पृश्यता का उद्भव कब व कैसे हुआ, इस सम्बन्ध में कोई एक निश्चित तिथि एवं समय बताना मुश्किल है जहाँ से कुछ व्यक्तियों को अस्पृश्य (अछूत) बताकर पशु तुल्य जीवन को मजबूर किया गया यहाँ यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि शूद्र एवं अस्पृश्य दोनों पृथक–प्रथक वर्ग है। चारों वर्गों से पृथक होने के कारण अछूतों के लिए पंचम् या फिपथ कास्ट जैसे शब्द का प्रयोग भी हुआ है। अस्पृश्यता की उत्पत्ति एकदम न होकर, धीरे–धीरे इसका व्यवहार समाज में प्रचलित हुआ। अस्पृश्यता अपने आप में एक स्वतंत्र संस्था नहीं है, अपितु यह हिन्दु समाज में जाति व्यवस्था के साथ सम्बन्धित है।

अस्पृश्यता की प्रथा कब और कैसे प्रचलित हुई तथा किसे कहा गया इस बारे में मतभेद हो सकते है। परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि हिन्दू सामाजिक व्यवस्था में एक ऐसा समय अवश्य आया, जब चतुर्थ वर्ण व्यवस्था में एक वर्ग को अस्पृश्य अथवा अछूत घोषित कर दिया गया। यद्यपि वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति के समय शूद्र को सेवा कार्य दिया गया और कार्य के आधार पर किसी भी वर्ण को ऊँच–नीच के दृष्टिकोण से नहीं देखा जाता था। परन्तु कालान्तर में शूद्रों के दो वर्ग बना दिए गए–प्रथम, स्पृश्य और द्वितीय, अस्पृश्य। इस अस्पृश्य या अछूत वर्ग को पंचम वर्ग भी कहा गया। यह माना जाने लगा कि पंचम वर्ग के मनुष्य निकृष्ट व अपवित्र होते हैं। इस पंचम वर्ग को न केवल छूने की मनाही थी बल्कि उसके साथ उठना–बैठना, खाना–पीना, सामाजिक संबंध रखना तथा उनके मंदिर में प्रवेश पर भी प्रतिबंध था। जहाँ उच्च वर्ग के लोग निवास करते थे, वहाँ ये नहीं रह सकते थे। उच्च वर्ग के लोग जिस मंदिर, तालाब, कुआं और पोशाक का प्रयोग करते थे, उसका प्रयोग अस्पृश्य वर्ग नहीं कर सकता था। इस प्रकार पंचम वर्ग पर उच्च वर्ग द्वारा कई निर्योग्यताएँ लाद दी गई थी।

यह अस्पृश्यता उस परम्परागत मनोभाव एवं व्यवहार–प्रतिमान को घोतक थी, जिसके अनुसार पंचम वर्ग के सदस्य छूने योग्य नहीं होते थे, बल्कि उच्च वर्ग द्वारा उनसे सामाजिक दूरी बनाए रखना भी जरूरी होता था। इसी प्रकार अस्पृश्य सदस्यों का भी कर्तव्य था कि वह उच्च वर्ग के सदस्यों से दूरी रखते थे उन्हें न छूएँ अथवा अछूत वर्ग के लोग भी उच्च वर्ग के लोगों को श्रेष्ठ मानते हुए उनका मान–सम्मान करें और उनसे दूरी बनाए रखें। अस्पृश्यता की यह धारणा केवल उच्च या मध्यम जातियों से ही सम्बद्ध नहीं रही, बल्कि अस्पृश्यों में भी उच्च जातियों द्वारा निम्न जातियों के प्रति भेवदभाव रखा जाने लगा। दूसरे शब्दों में यह आवश्यक नहीं था कि केवल उच्च जातियों द्वारा निम्न जातियों के प्रति भेदभाव रखा जाता था, बल्कि निम्न जातियों में भी यहीं प्रवृति पाई जाती थी। इसलिए अस्पृश्यता की मनोवृति जाति से नहीं बल्कि परम्परागत, घृणा और पिछड़ेपन के दृष्टिकोण से संबद्ध रही। इसलिए अस्पृश्य शब्द का अर्थ ही अछूत है।

अस्पृश्यता पर डॉ. अम्बेडकर के विचार.

अस्पृश्यता के उद्भव के सम्बन्ध में अम्बेडकर ने पर्याप्त शोध एवं विवेचन अपने ग्रन्थों में प्रस्तुत किया। अम्बेडकर ने अपनी कृति ''अछूत कौन और कैसे'' में अस्पृश्यता पर दो प्रश्नों का उल्लेख किया है– पहला, क्या संसार में केवल हिन्दू ही है जो अछूतपन मानते है या अहिन्दूओं में भी अछूतपन की कोई परम्परा रही है? दूसरा, क्या इतिहास के प्रारम्भिक काल में मानव अछूतपन से परिचित था, यदि या तो वह अछूतपन किसे कहता था? अम्बेडकर ने यह स्पष्ट किया है कि प्रारम्भिक मानव पवित्रता और अपवित्रता की अवधारणाओं से परिचित था। उसका मानना था कि कुछ विशेष घटनाओं के घटने से, कुछ विशेष वस्तुओं को स्पर्श करने से तथा कुछ विशेष व्यक्तियों को छूने से मनुष्य अपवित्र हो जाते है। उदाहरण के लिए जैसे बालक के जन्म के समय माता का पृथक्करण और मृत व्यक्ति का उसके सम्बंधियों से पृथक्करण। लेकिन यह अपवित्रता स्थाई नहीं होती थी। एक निष्चित अवधि के समाप्त होने पर निवारण संस्कार (पनी, रक्त छिड़कना, आग से तपना, सुगंधित पदार्थ जलाना औ सूर्य को देखना) करने पर अपवित्र मनुष्य पवित्र हो जाते थे। आगे आने वाले समय में अपवित्रता–निवारण में पंचगव्य का प्रचलन भी किया जाने लगा। इस तरह सम्पूर्ण संसार में हिन्दुओं में भी पवित्रता और अपवित्रता की प्रथा का प्रचलन था, परन्तु यह अल्कालिक होती थी। अर्थात् विशेष घटनाओं एवं अवसरों में प्रयोग में आती थी एवं उन अवसरों की अवधि समाप्त होते ही पवित्र संस्कार करने पर स्वतः ही समाप्त हो जाती थी। लेकिन हिन्दुओं का अछूतपन जन्म–मृत्यु आदि के अछूतपन से अलग कर रखा है। यह स्थायी होता है और ऐसी कोई वस्तु या संस्कार नहीं है जो अछूत को मानते थे, वहाँ केवल उन व्यक्तियों या उनके निकट सम्बन्धियों को ही कुछ अवधि के लिए पृथक् करते थें परन्तु भारत में हिन्दुओं के इस अछूतपन ने एक वर्ग को ही पृथक कर दिया। यहाँ अछूत अपवित्र हो जन्म लेते है तथा जन्मभर अपवित्र ही बने रहते है और अपवित्र ही मर जाते है। इस तरह अम्बेडकर के मतानुसार हिन्दुओं का अछूतपन एक ऐसी विचित्र घटना है, जो विश्व के किसी दूसरे हिस्से में नहीं पाई जाती है।

अस्पृश्यता पर महात्मा गाँधी के विचार

महात्मा गाँधी कहते है कि– एक स्वस्थ प्रकार की अस्पृश्यता सभी धर्मों में पाई जाती है, वह है स्वच्छता एवं सफाई का नियम।

महात्मा गाँधी की दृष्टि में वर्तमान अस्पृश्यता की उत्पत्ति हिन्दू धर्म के क्रमिक विकास की उस स्थिति में आई जब गाय की रक्षा करना धर्म का एक अंग बन गया तथा गाय को गौ–माता माना जाने लगा। उस समय कुछ लोग ऐसे थे, जो अधिक सभ्य नही थे एवं गौ–मांस खाते

थे। उस समय में सामाजिक नियम बहुत कठोरता से लागू किए जाते थे। इसलिए गौ–मांस खाने वालों को समाज से बहिस्कृत कर दिया गया और वे तब से अस्पृश्य माने जाने लगे। यह सामाजिक पाप, पिता से पुत्र को पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तान्तरित होता रहा है।

अस्पृश्यता की उत्पत्ति के सम्बन्ध में लेखक जी. एस. घुरिये ने अपनी ''कृति जाति, वर्ण और व्यवस्था'' में लिखा है कि इण्डो–आर्यन लोगों ने भारत के मूल निवासियों को दास बनाकर, सामाजिक व्यवस्था में सबसे निम्न स्थान देकर, घृणा का पात्र बनाया तथा उन्हें अपनी पूजा पद्धतियों से भी दूर रखा। डी.एन. मजूमदार अपनी कृति ''रेस और कल्चर'' में घुरिये के मत का खण्डन करते हुए कहते है कि दलित जातियों की निर्योग्यताएँ संस्कार सम्बन्धित नहीं है, बल्कि इसका आधार प्रजातीय और सांस्कृतिक भिन्नता है। इन भिन्नताओं के कारण धीरे–धीरे इतनी कटुता हो गई कि कुछ लोगों को स्पर्श करना ही अनुचित माना जाने लगा और वे अछूत कहलाए। अस्पृश्यता की उत्पत्ति का एक अन्य कारण व्यावसायिक दृष्टिकोण भी माना जाता है। नेसफील्ड का विचार है कि सामाजिक दृष्टिकोण से जो पेशे अपवित्र एवं अस्वच्छ माने जाते थे, उनसे छूआछूत की भावना पैदा हुई। इस प्रकार अस्वच्छ पेशे करने वाले व्यक्तियों और समूहों को अछूत माना जाने लगा। यद्यपि मनुस्मृति में पंचम वर्ण या अछूत का कोई वर्णन नहीं है परन्तु मनु यह स्वीकार करते है कि प्रतिलोम विवाह अर्थात् ब्राह्मण लड़की का शूद्र लड़के के संभोग से जन्म लेने वाली संतान को हिन्दू धर्म में वर्ण संकर मानने पर चतुर्थ वर्ण से पृथक रखा जाता है। कौटिल्य ने भी वर्ण संकर जातियों को सम्पति में हिस्से से वंचित किया है। उनकी सम्पति मात्र कुत्ते और गधे होते थे। इस तरह समाजिक व्यवस्था में पंचम वर्ग अतिशूद्र की स्थिति में जा पहुँचा।

निष्कर्ष

अंबेडकर की मान्यता थी की एक इंसान को दूसरे इंसान से छोटा समझना उसका शोषण करना इंसानियत का अपमान और मनुष्य तथा ईश्वर के प्रति पाप है। इस तरह अंबेडकर के सामाजिक समानता संबंधी विचारो को प्रवाह मे लाना होगा यही हमारे देश की उन्नति और विकास का एकमात्र रास्ता है उनका सपना था की संविधान की स्थापना के साथ ही सामाजिक न्याय की स्थापना हो जाएगी पर यह व्यवहार मे दूर के ढ़ोल सुहावने ही प्रतीत हो रहे है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *दत्त, महेश्वर – गॉधी अम्बेडकर और दलित, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2005*
2. *धनी, एस.एल. – धर्म और राजनीति में दलित चुनौती शिव शक्ति प्रकाशन, फरीदाबाद, 1992*
3. *धावनिया, महेश – बैरवा परिचय, प्रकाशकः प्रान्तीय बैरवा युवा संस्थान, जयपुर 2006*
4. *दुबे, अभय कुमार– आधुनिकता के आईने में दलित, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002*
5. *गाँधी, एम.के. सम्पूर्ण गॉधी वाड़मय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार*
6. *गुप्ता, शोभालाल – गॉधी और राजस्थान, राजस्थान राज्य गॉधी स्मारक निधि, भीलवाडा, 1969*
7. *जाटव, डी. आर– डॉ० अम्बेडकर– व्यक्तित्व एवं कृतित्व– समता साहित्य सदन, जयपुर, 1991*
8. *जैन, पी.सी. – सामाजिक आन्दोलन का समाजशास्त्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2003*
9. *कर्दम, जय प्रकाश– दलित साहित्य, प्रकाशक राधाकृष्ण प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली*
10. *कर्दम, जय प्रकाश– 21 वी सदी में दलित आन्दोलन, पंकज पुस्तक मंदिर, दिल्ली*
11. *कोसांबी दामोदर धर्मानन्द, प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, राजकमल प्रकाशन, 1998*
12. *मैथ्यू, पी.डी. – अस्पृश्यता उन्मूलन संबंधी कानून, भारतीय समाजिक संस्थान, नई दिल्ली*
13. *मेघवाल, कुसुमः हिन्दी उपन्यासों में दलित वर्ग, संधी प्रकाशन, उदयपुर*